P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-III*November-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

पंजाब की तंत्री वादन संगीत परंपरा में 'रबाब' वाद्य

ललिता जैन
सहायक अध्यापक,
संगीत वादन,
राजकीय रिपुदमन कालेज,
नाभा, पटियाला

सारांश

पंजाब की तंत्री वादन परम्परा का आरम्भ मध्य काल में गुरु नानक देव के समय से (जन्म 1469 ई.) हुआ माना जा सकता है। अतः 'रबाब' पंजाब की तंत्री वादन संगीत परम्परा का प्रथम प्रमुख वाद्य कहा जा सकता है। गुरू काल में ही रबाब के साथ–साथ पंजाब में सारंदा, ताऊस और दिलरूबा आदि तंत्री वाद्यों का भी प्रचलन हो गया। मध्य काल से प्रारम्भ होकर वर्तमान काल तक आते–आते सितार और सारंगी आदि वाद्य भी इस परम्परा से जुड़ गए। आधुनिक पंजाब में उपरोक्त सभी तंत्री वाद्यों का वादन, पंजाब की तंत्री वादन संगीत परम्परा को प्रफुल्लित कर रहा है, जिसको हम भली–भान्ति जानते हैं।

मुख्य शब्द : रबाब, तंत्री, वाद्य परम्परा इन पंजाब, रबाब वाद्य परम्परा।

प्रस्तावना

यदि पंजाब की क्रियात्मक संगीत परम्परा का अवलोकन करें तो संगीत की तीनों विधाओं (शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, गुरमति संगीत) में इन तंत्री वाद्यों का भरपूर प्रयोग हुआ है। पंजाब के शास्त्रीय गायन के घरानों में (शाम चौरासी घराना, कसूर घराना और पटियाला घराना) और तंत्री वादन के कपूरथला–पटियाला घराने में तंत्री वादकों ने पंजाब की तंत्री वादन परम्परा को समृद्ध बनाया है। मध्य काल में पंजाब के गुरूबाणी गायन (जिसको आज गुरूमति संगीत के रूप में जाना जाता है) में उक्त तंत्री वाद्यों का प्रयोग संगति रूप में होता रहा है। आधुनिक पंजाब में तंत्री वाद्यों का प्रयोग संगति रूप के साथ–साथ एकल वादन के रूप में भी हो रहा है।

रबाब

पंजाब की संगीत परम्परा में रबाब एक प्रचलित तंत्री वाद्य है। मुख्य तौर पर गुरमति संगीत में रबाब को प्रमुख तंत्री वाद्य कहा गया है।

रबाब का पिछोकड़

डा. लालमणि मिश्र के अनुसार, 'रबाब चित्रा वीणा का विकसित रूप है जो लगभग चौदवीं शताब्दी में विकसित हुआ।'[1] भाई काहन सिंह नाभा रबाब के बारे में लिखते हैं कि ''रबाब तार और तन्द का इक बाजा है। संगीत में इसका नाम रावण वीणा है, इसके दो भेद हैं : एक निबद्ध (जिसमें तन्द के बद्ध स्वरों के चिन्ह के लिए बंधे हों) दूसरा अनिबद्ध (जिसमें बद्ध न हो)।''[2] डा. कंवर मृगेंदर सिंह के अनुसार, 'भारत में रबाबियों की दो परम्पराएं हैं। पहली गुरू नानक ने चलाई। जिसमें उनकी आज्ञा के अनुसार भाई फिरन्दा (रबाबी) से भाई मरदाना (रबाबी) को रबाब की प्राप्ति हुई। इस रबाब को कंवर मृगेंदर सिंह ने शास्त्रीय संगीत की 'नारद वीणा' कहा है।'[3] दूसरी परम्परा ''मुगल शाही रबाबियों ने चलाई। उन्होंने रबाब के जिस रूप को अपनाया, वह प्राचीन चित्रा वीणा का विकसित रूप था।'[4] सुनीता धर के अनुसार, ''रबाब उत्तर भारत का एक लोकप्रिय लोकवाद्य था, अतः तानसेन के समय (16वीं शताब्दी) रबाब, शास्त्रीय वाद्य के रूप में विकसित हुआ।''[5] डा. गुरनाम सिंह, भाई काहन सिंह नाभा के मत पर अपनी सहमति प्रकट करते हुए लिखते हैं, ''गुरू नानक देव जी की आज्ञा अनुसार भाई फिरन्दे (रबाबी) ने एक विशेष प्रकार की रबाब तैयार की और भाई मरदाने (रबाबी) को प्रदान की।''[6]डा. कंवर मृगेंदर सिंह (सितार, रूद्रवीणा, सारंदा वादक और प्रसिद्ध लेखक) और डा. लालमणि मिश्र (भारतीय संगीत के प्रसिद्ध लेखक व वीणा वादक) ने स्पष्ट रूप में लिखा है कि भारत में दो तरह के रबाब की परम्परा भारतीय संगीत में रही है। एक रबाब जिसको जवा के साथ, तिकोणीं के साथ या हड्डी के साथ बजाया जाता था और दूसरी तरह का रबाब गज के साथ बजाया जाता था। विभिन्न विद्वान इस वाद्य का विकास नारद वीणा[7], रूद्रवीणा[8], चित्रा वीणा[9], रावण वीणा[10], से मानते हैं। पंजाब मे रबाब के जिस रूप का प्रचलन है, वह प्राचीन चित्रा वीणा का ही विकसित रूप है जिसको जवा से बजाया जाता है। तानसेन के वंशजों ने इसी रूप को अपनाया।

पंजाब में रबाब वादन परम्परा

भारतीय संगीत के संस्कृत ग्रन्थों में रबाब नाम का उल्लेख सर्वप्रथम सतरहवीं शताब्दी (17वीं) में पंडित अहोवल ने अपने ग्रन्थ 'संगीत पारिजात' के वाद्य प्रकरण में किया है :

रवं वहति यद्यस्मात्त तो रवावहः स्मृतः ।।125।।[11]

संगीत पारिजात वाद्य प्रकरण चाहे संगीत के संस्कृत ग्रन्थों में सबसे पहले संगीत पारिजात ग्रन्थ में रबाब वाद्य के नाम का उल्लेख प्राप्त होता है परन्तु क्रियात्मक रूप से सबसे पहले पंजाब में रबाब वादन परम्परा का आरम्भ पंद्रहवीं शताब्दी (15वीं) में गुरू नानक देव (जन्म 1469 ई.) के साथी भाई मरदाना के रबाब वादन से हुई मानी जाती है। भाई मरदाना के रबाब वादन के संबंध में उदाहरण मिलते हैं। आदि ग्रन्थ (सोलहवीं शताब्दी) में संकलित बाणी और 'भाई गुरदास जी दी वार' में रबाब वादन के उदाहरण मिलते हैं। गुरू नानक देव जी की वाणी गायन मे संगति रूप में भाई मरदाना रबाब वादन करते थे। इस संबंध में भाई गुरदास जी की वार में उदाहरण इस तरह मिलते हैं :

''फिर बाबा गया बगदाद नो बाहर जाइ किया असथाना।
इक बाबा अकाल रूप दूजा रबाबी मरदाना।।''
वार 1 पऊड़ी 34[12]

भाई मरदाना उत्तम रबाब वादक थे। उनके रबाब वादन की प्रशंसा का उदाहरण इस प्रकार मिलता है :

''भला रबाब वजाईंदा मजलस मरदाना मीरासी।''
वार 1 पऊड़ी 13[13]

भाई मरदाना को गुरू नानक देव जी ने अध्यात्मिक लय में बहा लिया था। गुरू नानक देव ने भाई मरदाना के साथ–साथ रबाब को अध्यात्मिक वाणी के संचार का माध्यम बनाया। जब गुरू नानक अध्यात्मिक वाणी का कीर्तन करते तो भाई मरदाना उनके साथ रबाब पर संगति करता और वाणी के साथ एक रूप हो जाता था। इस संबंध में डा. गुरनाम सिंह लिखते हैं, ''जब कभी भी गुरू नानक देव वाणी उच्चारण करते या शब्द गायन प्रारम्भ करते तो फरमाया करते थे, ''मरदानिया! शब्द चित कर, तऊ बाझ वाणी सर नहीं आवंदी। तब गुरू बाबे कहा, मरदानिया रबाब बजाई।''[14]

वाणी संचार के लिए रबाब वादन परम्परा भाई मरदाने के बाद भी पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलती रही। इस संबंध में कंवर मृगेंदर सिंह ने अपने खोज भरपूर लेख में विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है। उदाहरण स्वरूप उल्लेख ज्यों का त्यों दिया जा रहा है।

गुरू काल में गुरमति रबाबी शाही रबाबी

1. गुरू नानक देव जी 1469–97–1539
   भाई फिरन्दा और भाई मरदाना।
2. गुरू अंगद देव जी 1504–39–1552
   भाई मरदाने का पुत्र भाई शहजादा
3. गुरू अमर दास जी 1479–1552–1574
   भाई बलवंड और भाई सत्ता
4. गुरू राम दास जी 1534–74–1581
   गुरू रबाबी दो प्रणालियॉ मुगल रबाबी
5. गुरू अर्जुन देव जी 1563–81–1606
   भाई बलवंड और भाई सत्ता
6. गुरू हरगोबिन्द जी 1590–1606–1645
   भाई बाबक रबाबी और अब्दुल नत्था ढाडी
7. गुरू हरिराय जी 1630–45–1661
   रबाबी भाई बाबक और चार पुत्र
8. गुरू हरिकृष्ण जी 1665–61–1664
   रबाबी बाबक वंशी रबाबी पुत्र
9. गुरू तेग बहादुर जी 1621–61–1675
   रबाबी बाबक वंशी रबाबी पुत्र
10. गुरू गोबिन्द सिंह जी 1661–1675–1708
    रबाबी बाबक वंशी रबाबी नन्द और रबाबी चंद''[15]

उदाहरण से ज्ञात होता है कि गुरू साहिबान के काल में और बाद में भी रबाब वादन का भरपूर प्रचलन हुआ। इस संबंध में कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं :

दीपा देऊ नारायण दास बूले दे जाइए बलिहारी[16]
वारां भाई गुरदास जी, वार 11 पऊड़ी 14
पांधा बूला जानिए गुरबाणी गायन लेखारी[17]
वार 11 पऊड़ी 15
झांझू अते मुकन्द है कीर्तन करे हजूर किदारा[18]
साधसंगत परगट पाहारा।।15।।
वार 11 पऊड़ी 17
राम दीप उग्रसैन नागउरी गुर शब्द विचारी[19]
वार 11 पऊड़ी 18

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि गुरू काल में प्रसिद्ध रबाब वादक हुए हैं। गुरू अंगद देव जी के समय (भाई दीपा, भाई साधु, भाई बादु), गुरू अमर दास जी के समय (भाई पांधा, भाई बुल्ला, भाई झांझु, भाई मुकन्द, भाई किदारा), गुरू हरिराय जी के समय (भाई जस जी, भाई नत्थू जी, भाई रत्ता जी) गुरू गोबिन्द सिंह जी के समय (भाई सद्दू, भाई मद्दू) मरदाना वंशी आदि प्रसिद्ध रबाबी हुए हैं। उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि गुरूकाल में पंजाब में रबाब वादन उच्च–कोटि की थी।

मुग़ल काल में रबाब वादन

पंजाब की रबाब वादन परंपरा के समकालीन भारतीय संगीत में विशेषकर मुग़ल काल में भी रबाब वादन का प्रचलन रहा। अकबर के दरबार में (1556–1605 ई.) सिंघलगढ़ के राजा समोखन सिंह के पुत्र मिश्री सिंह (नैबादत्त खान) और मियॉ तानसेन के बीच संगीत मुकाबला हुआ। जिसमें राजा मिश्रीसिंह (वीणाकार) की जीत हुई और मियां तानसेन ने अपनी पुत्री का विवाह राजा मिश्री सिंह से कर दिया और तानसेन के पुत्र '(सूरत सेन, तरंग सेन, शरत सेन, विलास खां)'[20] राजा मिश्री सिंह के गंडा बांध शिष्य बने। राजा मिश्री सिंह (वीणाकार) ने तानसेन के पुत्रों को रबाब वादन की शिक्षा दी। जिसमें तानसेन के पुत्र वंशी सेनी घराने की मुग़ल रबाब वादन परम्परा आरम्भ हुई। इस तरह राजा मिश्री सिंह (वीणाकार) से सेनी घराने में (तानसेन पुत्र वंशी) रबाबी और 'तानसेन की पुत्री वंश (राजा मिश्री सिंह के खानदान में) वीणाकार की परम्परा प्रारम्भ हुई।'[21]

मुग़ल काल में रबाब वादन परम्परा में मुग़ल सम्राट अकबर के समय तानसेन के पुत्र बिलास खां, बिलास खां के दामाद लाल खां[22] (रबाबी) (शाहजहॉ के समय 1630 ई.) सुखीसेन[23] (औरंगज़ेब के समय 1658–1707) तथा इसके बाद सेनी घराने के 'जाफर खां, बासत खां, प्यार खां, मोहम्मद अली, सादिक अली'[24] आदि रबाब वादकों ने रबाब वादन परम्परा को समृद्ध बनाया। रबाब वादन की परम्परा सतरहवीं शताब्दी (17वीं) तक चलती रही। 'अठारहवीं

शताब्दी में सरोद और सुरसिंगार वाद्य के प्रचलन के बाद रबाब वाद्य की वादन परम्परा की अवनति होने लगी।'[25]

वर्तमान में रबाब की वादन परम्परा :

वर्तमान काल में रबाब वादन को पुनः सजीव करने के भरपूर प्रयत्न किए जा रहे हैं। इस संबंध में पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला के गुरमति संगीत विभाग के प्रयत्न प्रशंसनीय हैं। गुरमति संगीत विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला में रबाब को तंत्री वाद्य वादन विषय में एक चुनिन्दा वाद्य के रूप में अपनाया गया है। जिस में विद्यार्थी बढ़ चढ़ कर रबाब वाद्य का वादन कर रहे हैं। यही नहीं गुरमति संगीत विभाग की तरफ से किए जा रहे रागबद्ध गुरबाणी गायन में संगति रूप में रबाब वाद्य का भरपूर प्रयोग हो रहा है। इस तरह रबाब वाद्य की आज दो तरफा (संगति रूप और एकल वादन रूप में) प्रफुल्लित हो रही है। गुरमति संगीत विभाग की तरफ से रबाब की पुनः सजीवता और प्रफुल्लता के लिए रबाब वाद्य वादन की वर्कशाप लगवाई गई है। विद्यार्थियों को रबाब वादन के प्रति प्रेरणा हेतु हर वर्ष तंत्री वाद्य वादन मुकाबले करवाये जाते हैं तथा विभिन्न सैमीनार कान्फ्रैंस द्वारा रबाब वादन की परम्परा को उच्च स्तर तक पहुँचाने के लिए प्रयत्नशील है जो कि प्रशंसनीय है। रबाब वादन परम्परा को ज्यादा अच्छे से समझने हेतु रबाब की बनावट का उल्लेख किया जा रहा है :

रबाब की बनावट

पुरातन रबाब में तन्द या रेशम की बुनी तार का प्रयोग किया जाता रहा। यह वाद्य एक ही ज़ील की तार से बजाया जाता था। ''चमड़ा मढ़े हुए वाद्य के कारण इस वाद्य की आवाज़ बुलन्द होती है। इसी कारण ही मुग़ल शाही रबाबियों ने वीणाकारों, सितारियों के साथ हमेशा मुग़ल दरबारों में संगीत मुकाबले किए और दिगविजय रहे।''[26] रबाब की बनावट और स्वरूप संबंधी मुख्य रूप से जो भिन्नता दिखाई देती है, वह इस प्रकार है :–

1. ''पुरातन रबाब और आधुनिक रबाब के तूंबे में भिन्नता है।
2. ''पुरातन रबाब में पर्दे नहीं लगे होते थे परन्तु आधुनिक रबाब में पर्दे भी लगा लिए जाते हैं।''[27]
3. पुरातन रबाब में चार तारें होती थीं। आधुनिक रबाब में मुख्य छः तारें होती हैं तथा तरब की तारें भी लगाई जा रही हैं।

वर्तमान रबाब की बनावट और मुख्य अंग

रबाब वाद्य तीन फुट से साढ़े तीन फुट लम्बी लकड़ी को खोखला करके बनाया जाता है। जिसको डांड कहते हैं। डांड के नीचे की तरफ लकड़ी का ही तूंबा लगा होता है जो कि डांड का ही हिस्सा होता है। आधुनिक काल में रबाब का तूंबा कुछ चौड़ा होता है और ऊपर से चपटा होता है। तूंबा डांड की तरफ को सिंकुड़ता जाता है भाव इसकी मोटाई कुछ कम होती जाती है।

तूंबे का ऊपरी भाग बकरी या किसी और जानवर की चमड़ी से मढ़ा जाता है। इसको मांद कहते हैं। मांद के ऊपरी मध्य लकड़ी की घोड़ी रखी जाती है। जिसको घुड़च या घुड़च घनी कहते हैं। डांड के ऊपरी छोर पर एक घुड़च लगाया जाता है जिसमें से तारें गुजरती है इसे तार घनी या तारगहन कहते हैं।

रबाब के तार

रबाब के छः तार होते हैं जिसको क्रमवार ज़ीर या ज़ील की तार, म्यान की तार, स्वर, मन्द्र, घोर, खरज़ की तार कहते हैं। ज़ील की तार – मध्य सप्तक पंचम, म्यान की तार – मध्य ऋषभ, स्वर की तार – मध्य षड़ज, मन्द्र की तार – मन्द्र पंचम, घोर की तार – मन्द्र मध्यम, खरज की तार – मन्द्र षड़ज पर मिलाई जाती है।

रबाब को लकड़ी या हाथी दॉत के तिकोणे टुकड़े के साथ बजाया जाता है। इसको जवा कहते हैं। वर्तमान में रबाब की यही बनावट मान्य है। वर्तमान में कुछ रबाब वादक तरब की तारों का भी प्रयोग कर लेते हैं। ऐसी रबाब में तरब की तारों को राग की स्वर व्यवस्था के अनुसार मिला लिया जाता है। कुछ तंत्री वादक रबाब में चिकारी की तार का भी प्रयोग करते हैं। इसे तार सप्तक के षड्ज में मिलाया जाता है।

रबाब की वादन शैली :

डा. कंवर मृगेंदर सिंह के अनुसार रबाब पर वीणा, सितार की तरह झन्तकार झाले नहीं बज सकतें क्योंकि प्राचीन रबाब मे सितार/वीणा की तरह चिकारी पपीहे की तार नहीं थी। इसीलिए केवल बीन अंग आलाप हो सकता है। आधुनिक रबाब में कहीं–कहीं चिकारी की तार का प्रयोग होने लगा है। जिससे अब रबाब पर झन्तकार झाले भी बजाना संभव है। ''रबाब पर मसीतखानी बाज, रज़ाखानी बाज, फिरोज़ खानी बाज और पॉचों ताल जातियों में आलाप, लड़गुथाव, बोल बॉट, घर बाँट, तालपरन जो पखावज और तबले का काम भी निभा दे, ऐसी सभी शैलियों की रीत बजाई जा सकती है।''[28] डा. लालमणि मिश्र के अनुसार जिन तंत्री वाद्यों को एकल वादन के रूप में बजाया जाता है उन पर मुख्य रूप में ख्याल शैली का वादन होता है, बाद में ठुमरी शैली का। आधुनिक रबाब एकल के साथ साथ गुरमति संगीत में संगति रूप में भी बजाया जा रहा है कहने का भाव कि रबाब पर गायकी और तंत्रकारी दोनों अंग बजाए जाते हैं।

संक्षेप में हम कह सकते है कि पंजाब की संगीत परम्परा के प्रयत्नों के फलस्वरूप रबाब वाद्य की वादन परम्परा को केवल सजीव ही नहीं किया जा रहा बल्कि रबाब वाद्य की वादन परम्परा प्रफुल्लित राह पर है।

संदर्भ

1. डा. लालमणि मिश्र, भारतीय संगीत वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2005, पृष्ठ 98
2. भाई काहन सिंह नाभा, गुरशब्द रत्नाकर महान कोष (पंजाबी) भाषा विभाग पंजाब, तीसरा संस्करण 2006, पृष्ठ 103
3. डा. कंवर मृगेंदर सिंह (खोज पत्र), संगीतक साजां दी उत्पति ते विकास (पंजाबी), सामाजिक विज्ञान पत्र (संगीतक साज़ विशेष अंक), संपाः डा. जसबीर कौर, दिसंबर 2009, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पृष्ठ 06
4. – वही – पृष्ठ 07
5. सुनीता धर, इंडियन क्लासीकल म्यूज़िक एण्ड सेनिया घराना काट्रीब्यूशन (अंग्रेज़ी) रिलायंस पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली। पहली बार 1995, पृष्ठ 131

6. डा. गुरनाम सिंह, गुरमति संगीत प्रबन्ध ते पासार (पंजाबी), पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पहली बार 2000, पृष्ठ 157
7. डा. देविन्द्र कौर (खोज पत्र), गुरमति संगीत विच तंत्री साजां दा प्रयोग : आलोचनात्मक अध्ययन (पंजाबी), सामाजिक विज्ञान पत्र, (गुरमति संगीत विशेष अंक), संपाः डा. जसबीर कौर, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, दिसंबर 2003, पृष्ठ 71
8. डा. लालमणि मिश्र, भारतीय संगीत वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2005, पृष्ठ 115
9. भाई काहन सिंह नाभा, गुरशब्द रत्नाकर महान कोष (पंजाबी), भाषा विभाग, पंजाब, तीसरा संस्करण 2006, पृष्ठ 1023
10. – वही – पृष्ठ 925
11. डा. लालमणि मिश्र, भारतीय संगीत वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2005, पृष्ठ 98
12. वारां भाई गुरदास जी (पंजाबी) टीकाकार ज्ञानी हरबंस सिंह, खालसा साहित सदन, अमृतसर, दिसंबर 2004, पृष्ठ 47
13. – वही – पृष्ठ 221
14. डा. गुरनाम सिंह, गुरमति संगीत प्रबन्ध ते पासार (पंजाबी), पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पहली बार 2000, पृष्ठ 157
15. डा. कंवर मृगेंदर सिंह (खोज पत्र), पटियाला दरबार द्वारा श्री गुरमति संगीत दी सरप्रस्ती (पंजाबी), सामाजिक विज्ञान पत्र (अंक 51), गुरमति संगीत विशेष अंक, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, दिसंबर 2003, पृष्ठ 159
16. वारां भाई गुरदास जी (पंजाबी) टीकाकार ज्ञानी हरबंस सिंह, खालसा साहित सदन, अमृतसर, दिसंबर 2004, पृष्ठ 222
17. – वही – पृष्ठ 223
18. – वही – पृष्ठ 225
19. – वही – पृष्ठ 273
20. डा. कंवर मृगेंदर सिंह (खोज पत्र), संगीतक साजां दी उत्पति ते विकास (पंजाबी), सामाजिक विज्ञान पत्र (संगीतक साज़ विशेष अंक), संपाः डा. जसबीर कौर, दिसंबर 2009, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पृष्ठ 07
21. डा. वीणा जैन, सेनी घराना और सितार वादन शैली, कनिष्क पब्लीशर्ज़ डिस्ट्रीब्यूटर्ज़, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2008, पृष्ठ 12
22. – वही – पृष्ठ 13
23. – वही – पृष्ठ 13
24. सुनीता धर, इंडियन क्लासीकल म्यूज़िक एण्ड सेनिया घराना काट्रीब्यूशन (अंग्रेज़ी) रिलायंस पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली। पहली बार 1995, पृष्ठ 133
25. डा. कंवर मृगेंदर सिंह (खोज पत्र), संगीतक साजां दी उत्पति ते विकास (पंजाबी), सामाजिक विज्ञान पत्र (संगीतक साज़ विशेष अंक), संपाः डा. जसबीर कौर, दिसंबर 2009, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पृष्ठ 12
26. कंवर मृगेंदर सिंह, वादन सागर (भाग–2), पब्लीकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पृष्ठ 854
27. डा. गुरनाम सिंह, गुरमति संगीत प्रबंध ते पासार (पंजाबी), पब्लीकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पहली बार 2000, पृष्ठ 159
28. डा. कंवर मृगेंदर सिंह, (खोज पत्र), संगीतक साज़ा दी उत्पति ते विकास (पंजाबी), सामाजिक विज्ञान पत्र (संगीतक साज़ विशेष अंक), संपाः डा. जसबीर कौर, दिसंबर 2009, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पृष्ठ 06